This is the subtitle of PDF, Use long text here.

रस शुक्लजी के अनुसार कविता का साध्य है, जबकि अलंकार उसका साधन। शुक्लजी आत्मा को नहीं, बल्कि ध्यान को अनुभूति का आधार मानते थे।

* फ्रांस में संवेदनावाद (impressionism) का जो आंदोलन आया था, उसमें शब्दों के अर्थ की अपेक्षा उसकी नाद-शक्ति पर अधिक बल दिया जाता था। नाद का कविता की सौन्दर्य-वृद्धि में निश्चित योगदान रहता है।

छन्द और लय के संबंध में, "छन्द वास्तव में बँधी हुई लय के भिन्न-भिन्न ढाँचों (Pattern) का योग है जो निर्दिष्ट लम्बाई का होता है। लय स्वर के उतार-चढ़ाव के छोटे-छोटे ढाँचे ही हैं, जो किसी छन्द के चरण के भीतर ही न्यस्त रहते हैं।"

सौन्दर्य को केवल वस्तुनिरपेक्ष भाव-मात्र नहीं माना है और कहा है: "जैसे वीर कर्म से पृथक वीरत्व कोई पदार्थ नहीं, वैसे ही सुन्दर वस्तु से पृथक सौन्दर्य कोई पदार्थ नहीं।" सौन्दर्य भी उससे स्वतंत्र नहीं है। कविता रसात्मक तभी समझी जाती है, जबकि पाठक का मन अपने स्वार्थ की सीमाओं से मुक्त होकर उसमें लीन हो जाए। यही अवस्था सौन्दर्य की भी अवस्था है। सौन्दर्य के केवल दो ही रूप हैं — सुन्दर और असुन्दर। शुक्लजी का 'सौन्दर्य', 'मंगल' का काव्यात्मक पर्याय है।

This is the subtitle of PDF, Use long text here.

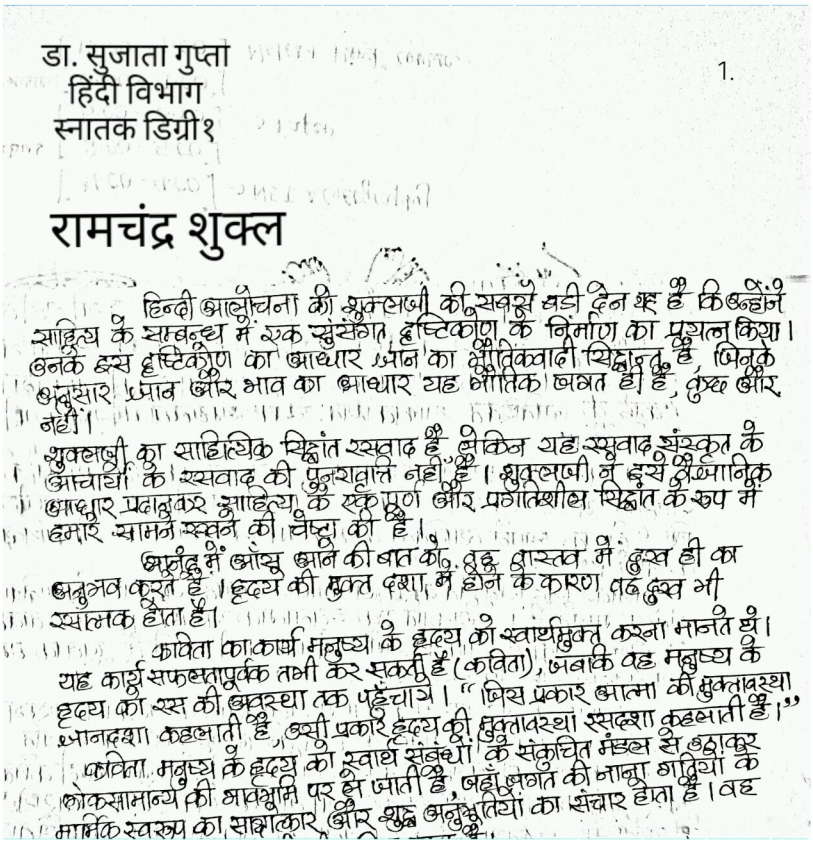

डा. सुजाता गुप्ता
हिंदी विभाग
स्नातक डिग्री१

1.

रामचंद्र शुक्ल

हिन्दी आलोचना को शुक्लजी की सबसे बड़ी देन यह है कि उन्होंने साहित्य के सम्बन्ध में एक सुसंगत दृष्टिकोण के निर्माण का प्रयत्न किया। उनके इस दृष्टिकोण का आधार ज्ञान का बौद्धिकवादी सिद्धान्त है, जिसके अनुसार प्राण और भाव का आधार यह भौतिक जगत ही है, दुख और नहीं।

शुक्लजी का साहित्यिक सिद्धांत रसवाद है, लेकिन यह रसवाद संस्कृत के आचार्यों के रसवाद की पुनरावृत्ति नहीं है। शुक्लजी ने इसे वैज्ञानिक आधार प्रदानकर साहित्य के एक पूर्ण और प्रगतिशील सिद्धांत के रूप में हमारे सामने रखने की चेष्टा की है।

आनंद में आँसू आने की बात को वह वास्तव में दुख ही का अनुभव करते हैं। हृदय की मुक्त दशा में होने के कारण वह दुख भी रसात्मक होता है।

कविता का कार्य मनुष्य के हृदय को स्वार्थमुक्त करना मानते थे। यह कार्य सफलतापूर्वक तभी कर सकती है (कविता), जबकि वह मनुष्य के हृदय को उस की अवस्था तक पहुँचाये। "जिस प्रकार आत्मा की मुक्तावस्था ज्ञानदशा कहलाती है, उसी प्रकार हृदय की मुक्तावस्था रसदशा कहलाती है।" कविता मनुष्य के हृदय को स्वार्थ संबंधों के संकुचित मंडल से उठाकर लोकसामान्य की भावभूमि पर ले जाती है, जहाँ जगत की नाना गतियों के मार्मिक स्वरूप का साक्षात्कार और शुद्ध अनुभूतियों का संचार होता है। वह

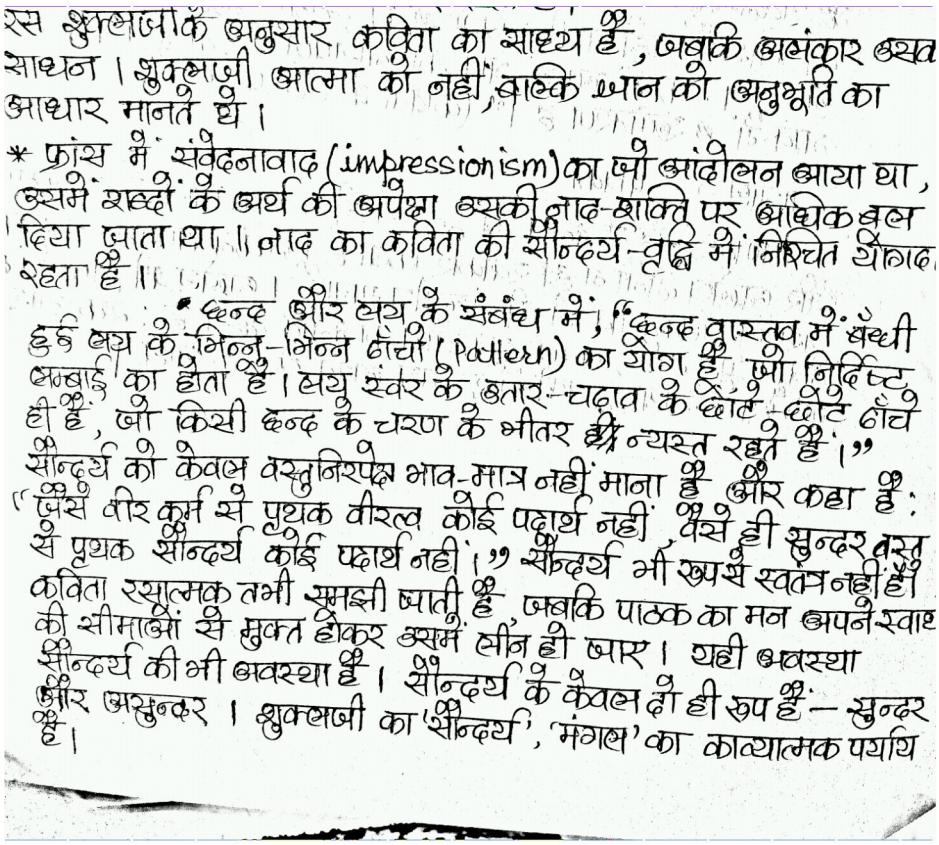

रस शुक्लजी के अनुसार, कविता का साध्य है, जबकि अलंकार रस साधन। शुक्लजी आत्मा को नहीं, बल्कि ज्ञान को अनुभूति का आधार मानते थे।

* फ्रांस में संवेदनावाद (impressionism) का जो आंदोलन आया था, उसमें शब्दों के अर्थ की अपेक्षा उसकी नाद-शक्ति पर अधिक बल दिया जाता था। नाद का कविता की सौन्दर्य-वृद्धि में निश्चित योगदान रहता है।

छन्द और लय के संबंध में, "छन्द वास्तव में बँधी हुई लय के भिन्न-भिन्न ढाँचों (Pattern) का योग है, जो निर्दिष्ट लम्बाई का होता है। लय स्वर के उतार-चढ़ाव के छोटे-छोटे ढाँचे ही हैं, जो किसी छन्द के चरण के भीतर ही न्यस्त रहते हैं।"

सौन्दर्य को केवल वस्तुनिरपेक्ष भाव-मात्र नहीं माना है और कहा है: "जैसे वीर कर्म से पृथक वीरत्व कोई पदार्थ नहीं, वैसे ही सुन्दर वस्तु से पृथक सौन्दर्य कोई पदार्थ नहीं।" सौन्दर्य भी उसे स्वतंत्र नहीं। कविता रसात्मक तभी समझी जाती है, जबकि पाठक का मन अपने स्वार्थ की सीमाओं से मुक्त होकर उसमें लीन हो जाए। यही अवस्था सौन्दर्य की भी अवस्था है। सौन्दर्य के केवल दो ही रूप हैं — सुन्दर और असुन्दर। शुक्लजी का 'सौन्दर्य', 'मंगल' का काव्यात्मक पर्याय है।